संदेश

ब्रह्मलीन पूज्य नानाजी देशमुख भारत की ऋषि परम्परा की ऐसी विभूति थे, जिन्होंने लोककल्याण को ही जीवन का परम लक्ष्य मानकर इसको जीवन का हर पल समर्पित कर दिया। नानाजी ने वैसे तो जीवन-भर अनेक लोककल्याणकारी कार्य किये लेकिन चित्रकूट में ग्रामोदय विश्वविद्यालय और दीनदयाल शोध संस्थान उनका श्रेष्ठतम कार्य माना जाता है। इसके माध्यम से उन्होंने विकास की भारतीय अवधारणा को मूर्तरूप दिया। यह उनकी परम पवित्र चेतना का ही प्रभाव रहा कि आसपास के सैकड़ों गाँवों में सद्भाव का ऐसा वातावरण बना कि वहाँ वर्षों से अदालत में कोई मुकदमा दायर नहीं हुआ।

श्रद्धेय नानाजी द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान को देखने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम जब गये तो नानाजी द्वारा किये गये कार्यों को देखकर हतप्रभ रह गये। उन्होंने इन कार्यों की सराहना करते हुये उन्हें देश के लिये अनुकरणीय बताया। नानाजी के सभी लोककल्याणकारी कार्यों को आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हम इस दिशा में कोई कसर नहीं छोड़ रहे।

नानाजी जैसे महापुरुषों के जीवन और कृत्यों को शब्दों में अभिव्यक्त करना वैसे तो असंभव है, लेकिन इसके लिये किया गया हर प्रयास स्तुत्य और सराहनीय है। जनसम्पर्क विभाग द्वारा श्रद्धेय नानाजी पर केन्द्रित पुस्तक राष्ट्र ऋषि नानाजी का प्रकाशन किया जाना ऐसा ही प्रयास है। मैं इस बात को अपना सौभाग्य मानता हूँ कि इस परम पुनीत कार्य में मुझे भी विनम्र योगदान करने का अवसर मिला है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक लोगों में लोककल्याण के कार्यों में सक्रिय रूप से जुड़ने की प्रेरणा जाग्रत करेगी।

(लक्ष्मीकांत शर्मा)
मंत्री
उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं
प्रशिक्षण, संस्कृति, जनसम्पर्क,
धार्मिक न्यास और धर्मस्व
मध्यप्रदेश